Index of write ups notes of Vedic Mathematics of Dr. S. K. Kapoor

04

Geeta Chapter 15 features

ХНАПТЕР–15

1. श्रीभगवानुवाच

   ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।

   छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।१।।

   sri bhagavan uvaca

   urdhva-mulam adhah-sakham asvattham prahur avyayam

   chandamsi yasya parnani yas tam veda sa veda-vit

GEETA CHAPTER -15
SHALOKA -1

Sh.	W	S	D	E	L	T
1	9	32	-1	14	77	309

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	
1	ऊ	र्ध्व	मू	ल	म	धः	शा	ख	म	श्व	त्थं	

	6	17	15	6	10	21	4	3	10	10	19	**121**
2	प्रा	हु	र	व्य	यम्							
	8	12	4	9	11							44
3	छन्	दां	सि									
	12	17	5									34
4	य	स्य										
	2	5										7
5	प	र्णा	नि									
	6	11	10									27
6	य	स्तं										
	2	17										19
7	वे	द										
	13	7										20
8	स											
	4											4
9	वे	द	वित्									

	13	7	13									33

पञ्चदशोऽध्यायः पुरूषोत्तमयोग श्लोकानिः२०

च्ंदबीकौंव ।कीलंल रू च्नतीवजंउउ ल्वहंरूौंसवों २०

पुष्पिका :- (इति श्री महाभारते शतसाहस्त्र्यां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि) (ॐ तत्सदिति) श्रीमद्भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे **पुरूषोत्तमयोग** योगो नाम **पञ्चदशो**ऽध्यायः ।।१।।

Pushpika : - (iti shri Mahabharte shatsahsatram vaiyasikyam bhishampariyani) (Om tatsat ity) (Shrimad Bhagwad Geeta Suupnishatsu Brahamvidya yam yogshastre Shri Krishan Arjun Sambade **Purushotamm** Yogo nam **Panchdasho** Adhyay)

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं

प्राहुरव्ययम् ।

छन्दांसि

यस्य

पर्णानि

यस्तं

वेद

स

वेदवित् ।।१।।

ХНАПТЕР–15

2. अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।

अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलापेके।।२।।

adhas cordhvam prasrtas tasya sakha guna-pravrddha visaya-pravalah

adhas camulany anusantatani karmanubandhini manusya-loke

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -2

Sh.	W	S	D	E	L	T
2	10	44	-2	14	100	380

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	अ	ध	श्चो	र्ध्वं					
	1	8	11	17					37
2	प्र	सृ	ता	स्त	स्य				

	7	7	6	8	5				**33**
3	शा	खा							
	4	4							**8**
4	गु	ण	प्र	वृ	द्धा				
	6	8	7	11	15				**47**
5	वि	ष	य	प्र	वा	लाः			
	9	7	2	7	9	20			**54**
6	अ	ध	श्च						
	1	8	5						**14**
7	मू	ला	न्य	नु	स	न्त	ता	नि	
	15	7	10	11	4	13	6	10	**76**
8	क	र्मा	नु	ब	न्धी	नि			
	2	13	11	8	19	10			**63**
9	म	नु	ष्य	लो	के				
	10	11	8	12	7				**48**

380

ХНАПТЕР–15

1. न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।

अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलम् असंगशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।।३।।

na rupam asyeha tathopalabhyate nanto na cadirna ca sampratistha

asvattham enam su-virudha-mulam asanga-sastrena drdhena chittva

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -3

Sh.	W	S	D	E	L	T
3	13	45	-1	13	102	419

	1	2	3	4	5	6	7	
1	न							
	9							9
2	रू	प	म	स्ये	ह			
	9	6	10	10	10			45
3	त	थो	प	ल	भ्य	त		
	5	12	6	6	10	5		44
4	ना	न्तो						
	10	19						29
5	न							
	9							9
6	चा	दि	र्नं					

	4	8	18					30
7	च							
	3							3
8	स	म्प्र	ति	ष्ठा				
	4	16	6	12				38
9	अ	श्व	त्थ	मे	नं			
	1	10	9	15	18			53
10	सु	वि	रू	ढ	मू	ल	म	
	6	9	15	7	15	6	10	68
11	स	ंग	श	स्त्रे	ण			
	4	9	3	14	8			38
12	दृ	ढे	न					
	10	12	9					31
13	छि	त्त्वा						
	5	17						22

419

ХНАПТЕР–15

1. ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता न निवर्तन्ति भूयः।
   तमेव चाद्यं पुरूषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।।४।।
   tatah padam tat parimargitavyam yasmin gata na nivartanti bhuyah

   tam eva cadyam purusam prapadye yatah pravrttih prasrta purani

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -4

Sh.	W	S	D	E	L	T
4	15	44	0	17	105	430

	1	2	3	4	5	6	7	
1	त	तः						
	5	18						23
2	प	दं						
	6	16						22
3	त	त्प	रि	मा	र्गि	त	व्यं	
	5	10	5	11	7	5	18	61
4	य	स्मि	न्ग	ता				
	2	14	12	6				34
5	न							
	9							9

6	नि	व	र्त	न्ति				
	10	8	7	14				39
7	भू	यः						
	14	15						29
8	त	मे	व					
	5	15	8					28
9	चा	द्यं						
	4	17						21
10	पु	रू	षं					
	8	9	16					33
11	प्र	प	द्ये					
	7	6	13					26
12	य	तः						
	2	18						20
13	प्र	वृ	त्तिः					
	7	11	23					41
14	प्र	सृ	ता					
	7	7	6					20
15	पु	रा	णी					
	8	5	11					24

430

ХНАПТЕР–15

1. निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।

द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर् गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।५।।

nirmana-moha jita-sanga-dosa adhyatima-nitya vinivrtta-kamah

dvandvair vimuktah sukha-duhkha-samjnair gacchanty amudhah padam avyayam tat

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -5

Sh.	W	S	D	E	L	T
5	9	44	-1	19	106	468

	1	2	3	4	5	6	
1	नि	र्मा	न	मो	हा		
	10	13	9	16	11		59
2	जि	त	स	ंग	दो	षा	
	6	5	4	4	13	8	40
3	अ	ध्या	त्म	नि	त्या		
	1	10	14	10	7		42
4	वि	नि	वृ	त्त	का	माः	
	9	10	11	9	3	24	66
5	द्व	न्द्वै	र्वि	मु	क्ताः		
	14	29	11	12	20		86
6	सु	ख	दुः	ख	स	ंज्ञै	
	6	3	22	3	4	24	62

7	र्ग	च्छ	न्त्य	मू	ढाः		
	6	6	14	15	21		62
8	प	द	म	व्य	यं		
	6	7	9	9	11		42
9	त्						
	9						9

468

ХНАПТЕР–15

1. न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।

यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।६।।

na tad bhasayate suryo na sasanko na pavakah

yad gatva na nivartante tad dhama paramam mama

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -6

Sh.	W	S	D	E	L	T
6	13	32	0	8	72	286

	1	2	3	4	5	
1	न					
	9					9
2	त	द्भा	स	य	ते	
	5	16	4	2	10	37
3	सू	र्यो				
	9	11				20
4	न					
	9					9
5	श	शा	ंको			
	3	4	13			20

6	न					
	9					9
7	पा	व	कः			
	7	8	15			30
8	यद्	ग	त्वा			
	8	4	13			25
9	न					
	9					9
10	नि	व	र्त	न्ते		
	10	8	7	14		39
11	त	द्धा	म			
	5	15	10			30
12	प	र	मं			
	6	4	19			29
13	म	म				
	10	10				20

286

ХНАПТЕР–15

1. ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।

मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।७।।

mamaivamso jiva-loke jiva-bhutah sanatanah

manah-sasthanindriyani prakrti-sthani karsati

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -7

Sh.	W	S	D	E	L	T
7	7	32	0	9	73	325

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	म	मै	वां	ंशा					
	10	17	18	9					54
2	जी	व	लो	क					
	8	8	12	7					35
3	जी	व	भू	तः					
	8	8	14	18					48
4	स	ना	त	नः					
	4	10	5	22					41
5	म	नः	ष	ष्ठा	नी	न्द्रि	या	णि	
	10	22	7	12	12	17	3	9	83

6	प्र	कृ	ति	स्था	नि				
	7	5	6	10	10				38
7	क	र्ष	ति						
	2	9	6						17

316

ХНАПТЕР–15

1. शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।।८।।

sariram yad avapnoti yac capy utkramatisvarah

grhitvaitani samyati vayur gandhan ivasayat

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -8

Sh.	W	S	D	E	L	T
8	6	32	0	12	76	278

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	श	री	रं						
	3	7	13						**23**
2	य	द	वा	प्नो	ति				
	2	7	9	20	6				**44**
3	य	च्चा	प्यु	त्क्रा	म	ती	श्व	रः	
	2	6	9	8	10	8	10	17	**70**
4	गृ	ही	त्वै	ता	नि				
	7	13	19	6	10				**55**
5	स	ंया	ति						
	13	3	6						**22**
6	वा	यु	र्ग	न्धा	नि	वा	श	यात्	
	9	4	6	17	10	9	3	6	**64**

ХНАПТЕР–15

1. श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।

अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।।९।।

srotram caksuh sparsanam ca rasanam ghranam eva ca

adhisthaya manas cayam visayan upasevate

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -9

Sh.	W	S	D	E	L	T
9	10	32	-1	11	74	276

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	श्रो	त्रं							
	10	15							25
2	च	क्षुः							
	3	23							26
3	स्प	र्श	न						
	9	5	9						23
4	च								
	3								3
5	र	स	नं						
	4	4	19						27

6	घ्रा	ण	मे	व					
	10	8	15	8					41
7	च								
	3								3
8	अ	धि	ष्ठा	य					
	1	9	12	2					24
9	म	न	श्चा	यं					
	10	9	11	11					41
10	वि	ष	या	नु	प	से	व	ते	
	9	7	3	11	6	9	8	10	63

276

ХНАПТЕР–15

1. उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।

विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।१०।।

utkramantam sthitam vapi bhunjaham va gunanvitam

vimudha nanupasyanti pasyanti jnana-caksusah

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -10

Sh.	W	S	D	E	L	T
10	10	32	-1	16	79	348

	1	2	3	4	5		
1	उ	त्क्रा	म	न्तं			
	3	8	10	13			34
2	स्थि	तं					
	10	14					24
3	वा	पि					
	9	7					16
4	भु	ञ्जा	नं				
	11	12	17				40
5	वा						
	9						9

6	गु	णा	न्वि	तम्			
	6	9	17	14			46
7	वि	मू	ढा				
	9	15	8				32
8	ना	नु	प	श्य	न्ति		
	10	11	6	4	14		45
9	प	श्य	न्ति				
	6	4	14				24
10	ज्ञा	न	च	क्षु	षः		
	12	9	3	10	20		54

324

ХНАПТЕР–15

1. यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।

यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ।।११।।

yatanto yoginas caiman pasyanty atmany avasthitam

yatanto 'py akrtatmano mainam pasyanty acetasah

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA-11

Sh.	W	S	D	E	L	T
11	6	32	0	18	82	320

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	य	त	न्तो						
	2	5	19						**26**
2	यो	गि	न	श्चै	नं				
	8	5	9	12	18				**52**
3	प	श्य	न्त्या	त्म	न्य	व	स्थि	तम्	
	6	4	15	14	10	8	10	14	**81**
4	य	त	न्तो	ऽप्य	कृ	ता	त्मा	नो	
	2	5	19	**8**	5	6	15	15	**75**
5	नै	नं							
	16	18							**34**
6	प	य	न्त्य	चे	त	सः			
	6	2	14	8	5	17			**52**

ХНАПТЕР–15

1. यदादित्यगतं तेजो जगद् भासयतेऽखिलम्।

यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।।१२।।

yad aditya-gatam tejo jagad bhasayate khilam

yac candramasi yac cagnau tat tejo viddhi mamakam

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA-12

Sh.	W	S	D	E	L	T
12	8	32	0	11	75	270

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	य	दा	दि	त्य	ग	तं			
	2	8	8	6	4	14			**42**
2	ते	जो							
	10	11							**21**
3	ज	ग्	द्भा	स	य	ते	ऽखि	लम्	
	5	4	16	4	2	10	6	15	**62**
5	य	च्च	न्द्र	म	सि				
	2	5	16	10	5				**38**
6	य	च्चा	ग्नौ						

	2	6	18						26
7	त	त्ते	जा						
	5	14	6						25
8	वि	ब्धि							
	9	15							24
9	मा	म	कम्						
	11	10	11						32

270

ХНАПТЕР–15

1. गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।।१३।।

gam avisya ca bhutani dharayamy aham ojasa

pusnami causadhih sarvah somo bhutva rasatmakah

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA-13

Sh.	W	S	D	E	L	T
13	10	32	0	9	73	320

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	गा	मा	वि	श्य					
	5	11	9	4					29
2	च								
	3								3
3	भू	ता	नि						
	14	6	10						30
4	धा	र	या	म्य	ह	मो	ज	सा	
	9	4	3	11	10	16	5	5	63
5	पु	ष्णा	मि						
	8	15	11						34

6	चौ	ष	धीः						
	11	7	24						42
7	स	र्वाः							
	4	24							28
8	सो	मो							
	10	16							26
9	भू	त्वा							
	14	13							27
10	र	सा	त्म	कः					
	4	5	14	15					38

320

ХНАПТЕР–15

1. अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।

प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।१४।।

aham vaisvanaro bhutva praninam deham asritah

pranapana-samayuktah pacamy annam catur-vidham

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA-14

Sh.	W	S	D	E	L	T
14	8	32	-1	14	77	333

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	अ	हं							
	1	19							20
2	वै	श्वा	न	रो					
	15	11	9	10					45
3	भू	त्वा							
	14	13							27
4	प्रा	णि	नां						
	8	9	10						27
5	दे	ह	मा	श्रि	तः				
	12	10	11	5	18				56

6	प्रा	णा	पा	न	स	मा	यु	क्तः	
	8	11	7	9	4	11	4	19	73
7	प	चा	म्य	न्नं					
	6	4	11	26					47
8	च	तु	र्वि	धम्					
	3	7	11	17					38

333

ХНАПТЕР–15

1. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।

वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद् वेदविदेव चाहम्।।१५।।

sarvasya caham hrdi sannivisto mattah smrtir jnanam apohanam ca

vedsis ca sarvair aham eva vedyo Vedanta-krd veda-vid eva caham

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA-15

Sh.	W	S	D	E	L	T
15	12	45	0	14	104	463

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	
1	स	र्व	स्य							
	4	10	5							19
2	चा	हं								
	4	19								23
3	हृ	दि								
	13	8								21
4	स	न्नि	वि	ष्टो						
	4	18	9	16						47
5	म	त्तः								

	10	22								32
6	स्मृ	ति	र्ज्ञा	न	म	पो	ह	नं		
	16	6	14	9	10	12	10	18		95
7	च									
	3									3
8	वे	दै	श्च							
	13	12	5							30
9	स	र्वै	र	ह	मे	व				
	4	17	4	10	15	8				58
10	वे	द्यो								
	13	14								27
11	वे	दा	न्त	कृ	द्वे	द	वि	दे	व	
	13	8	13	5	19	7	9	12	8	94
12	चा	हम्								
	9	19								28

477

ХНАПТЕР–15

1. द्वाविमो पुरूषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।

क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।१६ ।।

dvad imau purusau loke ksaras caksara eva ca

ksarah sarvani bhutani kuta-stho 'ksara ucyate

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -16

Sh.	W	S	D	E	L	T
16	11	32	-2	10	72	275

	1	2	3	4	5		
1	द्वा	वि	मौ				
	15	9	18				42
2	पु	रू	षौ				
	8	9	15				32
3	लो	के					
	12	7					19
4	क्ष	र	श्चा	क्ष	र		
	8	4	6	8	4		30
5	ए	व					
	6	8					14
6	च						

	3						3
7	क्ष	रः					
	8	17					25
8	स	र्वा	णि				
	4	11	9				24
9	भू	ता	नि				
	14	6	10				30
10	कू	ट	स्थो	ऽक्ष	र		
	7	4	15	9	4		39
11	उ	च्य	ते				
	3	4	10				17

275

ХНАПТЕР–15

1. उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।

यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।।१७।।

uttamah purusah tv anyah paramatmety udahrtah

yo loka-trayam avisya bibharty avyaya isvarah

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -17

Sh.	W	S	D	E	L	T
17	8	32	-1	17	80	306

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	उ	त्त	मः						
	3	9	23						**35**
2	पु	रू	ष	स्तव	न्यः				
	8	9	7	15	23				**62**
3	प	र	मा	त्मे	त्यु	दा	हृ	तः	
	6	4	11	19	8	8	13	18	**87**
4	यो								
	8								**8**
5	लो	क	त्र	य	मा	वि	श्य		
	12	2	6	2	11	9	4		**46**
6	बि	भ	र्त्य	व्य	य				
	9	9	8	9	2				**37**

7	ई	श्व	रः						
	4	10	17						31

306

ХНАПТЕР–15

1. यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरूषोत्तमः।।१८।।

yasmat ksaram atito 'ham aksarad api cottamah

ato 'smi loke vede ca prathitahpurusottamah

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -18

Sh.	W	S	D	E	L	T
18	8	32	0	10	74	317

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	य	स्मा	त्क्ष	र	म	ती	तो	ऽह	म	क्ष
	2	14	12	4	9	8	11	11	10	8
2	चो	त्त	मः							
	9	9	23							
3	अ	तो	ऽस्मि							
	1	11	15							
4	लो	के								
	12	7								
5	वे	दे								
	13	12								
6	च									
	3									
7	प्र	थि	तः							

	7	7	18								
8	पु	रू	षो	त्त	मः						
	8	9	13	9	23						

ХНАПТЕР–15

1. यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरूषोत्तमम्।

स सर्वविद् भजति मां सर्वभावेन भारत।।१९।।

yo mam evam asammudho janati purusottamam

sa sarva-vid bhajato mam sarva-bhavena bharata

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -19

Sh.	W	S	D	E	L	T
19	9	32	0	7	71	333

	1	2	3	4	5	6	7	8	
1	यो								
	8								8
2	मा	मे	व	म	स	म्मू	ढो		
	11	15	8	10	6	24	13		87
3	जा	ना	ति						
	6	10	6						22
4	पु	रू	षो	त्त	मम्				
	8	9	13	10	19				59
5	स								
	4								4
6	स	र्व	वि	द्भ	भ	ज	ति		

	4	10	9	14	5	6	20		68
7	मां								
	20								20
8	स	र्व	भा	वे	न				
	4	10	10	13	9				46
9	भा	र	त						
	10	4	5						19

333

ХНАПТЕР–15

1. इति गुह्यतमं शास्त्रामिदमुक्तं मयानघ।

एतद् बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।।२०।।

iti guhyatamam sastram idam uktam mayanagha

etad buddhva buddhiman syat krta-krtyas ca bharata

GEETA CHAPTER -15 SHALOKA -20

Sh.	W	S	D	E	L	T
20	7	32	-2	13	75	282

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	
1	इ	ति								
	2	6								8
2	गु	ह्य	त	मं						
	6	11	5	19						4
3	शा	स्त्रा	मि	द	मु	क्तं				
	4	9	11	7	12	15				5
4	म	या	न	घ						
	10	3	9	5						2
5	ए	त	द्बु	द्ध्वा						
	6	5	16	22						4
6	बु	द्धि	मा	न्स्या	त्कृ	त	कृ	त्य	श्च	
	10	15	11	14	9	5	5	6	5	8
7	भा	र	त							
	10	4	5							1